REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER – 2017

प्रेमचंद के साहित्य में धार्मिक संकीर्णता

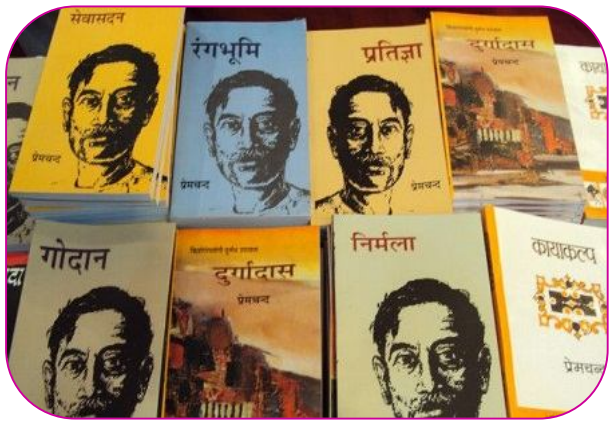

डॉ. दळवे सूर्यकांत माधवराव
हिन्दी विभाग , शरदचंद्र महाविद्यालय, शिराढोण. ता. कळंब जि. उस्मानाबाद.

प्रस्तावना:-

धार्मिक संकीर्णता से हिंदू समाज की जितनी अधोगति हूई है, उतनी शायद ही किसी अन्य समाज की हुई हो | सदियों ही किसी अन्य समात की हुई हो | सदियों से हमारा भारतीय समाज धार्मिक संर्कणता में जी रहा है | धार्मिक संकीर्णता के कारण हमारा समाज अलग - अलग टुकडो में विभ्क्त हो गया है | जो एक होने का नाम ही नही ले पा रहा है | धार्मिक संकीर्णता के कारण ही हिंदू समाज एक अंग अछूत समझा जाने लगा | कुलीनता का जामा पहने उच्च वर्ग के लोगों का धर्म अछूतों की मात्र छाया के स्पर्श से नष्ट होने लगा था | सामाजिक एवं धार्मिक प्रतिवंधो के कारण अस्पृश्य समझा जाने वाला यह वर्ग घुटन का अनुभव कर रहा था | पशुओं से भी हीन अवस्था में यह वर्ग जीवन जी रहा था | उसकी वेदना को जनमानसमें लाने का सफल प्रयास प्रेमचंदजी ने अपने साहित्य में किया है |

प्रेमचंदजी चाहते थे कि अछुतों को भी वे सभी धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त हो जो उच्च वर्ग को प्राप्त हैं | ये कितने तुच्छ, घृणित, सकुचित विचार है कि अछुतों का मंदिर में प्रवेश करने पर पवित्रता नष्ट हो जाती हैं और सब कुछ भ्रष्ट हो जाता हैं | 'कर्मभूमि' में ठाकुर के दरवाजे पर जूतों के पास बैठकर कथा सुनने वाले अछूतों में से एक को जूता जमाते हुए ब्रम्हचारी जी कहते है-'तू यहाँ आया क्या? यहाँ से वहाँ तक एक दरी बिछी हुई है | सबकासब भरभंड हुआ कि नही ? परसाद है, चरणामृत है, गंगाजल है | सब मिट्टी हुआ कि नही? अब जाडे - पाले में लोगों को नहाना - धोना पडेगा कि नही? और यह सुनते ही कि ये अछुत प्रतिदिन यहाँ आकर कथा सुनते हैं' सबको छूते थे | इनका छुआ हुआ प्रसाद लोग रोज खाते थे | इससे बढकर अनर्थ क्या हो सकता है? धर्म से बडा आघात और क्या हो सकता है? वहाँ उपस्थित धर्म के ठेकेदार क्रोधित होकर उन गरीबों पर जूतों से प्रहार करने लगते है | अछूतों के प्रति इस अमानवीय अन्याय, अत्याचार को सहने में असमर्थ शांतिकुमार धार्मिक संकीर्णता का पोषण करने वाले धर्माचार्यो को संबोधित करके कहते है-'अंधे भक्तों की आँखों में धूल झोककर यह हलवे बहुत दिन खाने को न मिलेंगे महाराज समझ गयें? अब वह समय आ रहा हैं, जब भगवान भी पानी में स्नान करेंगे, दुध से नही |' तथाकथित धर्माचार्यो कों यह प्रेमचंद की ही चुनौती है | संकुचित धार्मिक दृष्टिकोण के कारण अछुतों को धार्मिक अधिकारों से वंचित रखने वालों को समता का संदश दन शब्दों मे दिया गया है- 'भगवान की दृष्टी में न कोई छोटा है, न बड, न कोई शुध्द और न कोई अशुध्द | उसकी गोद सबके लिए खुली हुई है |'

'मंदिर' कहानी का पुजारी कहता है- 'अब अनर्थ हो गया | सुखिया मंदिर में जाकर ठाकुर जी को भ्रष्ट कर आयी |' पूजारी के मुख से सुनने के बाद सुखिया पर लातों - घूँसो की बौछार होने लगी | यहा मक कि जिस बच्चे की रक्षा के लिए वह मंदिर जाना चाहती थी, उसके हाथ से गिर पडा और तुरंत चल बसा | बच्चे की, मृत्यु से उसके हृदय में क्रोधाग्नि प्रज्जवलित हुई और पाखंडियों कों संबोधित करके कहने लगी- 'पापियों मेरे बच्चे के प्राण लेकर दूर क्यों खडे हो ? मुझे भी क्यों नही उसी के साथ मार डालते? मेरे छू लेने से ठाकुर जी को छूत लग गई? पारस को छूकर लोहा सोना बन जाता है, पर पारस लोहा नही हो सकता | मेरे छूने से ठाकुर जी अपवित्र हो जायेंगे | मुझे बनाया, तो छूत नही लगी?'

धार्मिक भावों से ओतप्रोत अछूतों के मंदिर - प्रवेश से ता ठाकुरजी अपवित्र हो जाते है, पर क्या वेश्याओं के नृत्य से सब कुछ पवित्र बना रहता है? कितनी विडंबना है कि राम-कृष्ण के जन्मोत्सव या अन्य धार्मिक अवसरों पर मंदिर में धर्म-ढोंगियों द्वारा वेश्या नृत्य का आयोजन किया जात है | दस संबंध में ढोंगी धर्माचार्यो को लक्ष करके 'गबन' का रमेश कहता हैं - 'इन मुर्खो के हाथो हिंदू धर्म का

ब्रम्हचारी जी ने माथा पीट लिया | ये दुष्ट रोज यहाँ आते थे | रोज

सर्वनाश हो जाएगा | एक तो वेश्याओं का नाम यों मी बुरा, उस पर ठाकुरद्वारे में | छि: | छि: | न जाने इन गधों को कब अकल आयेगी?

उच्च वर्ग की सेवा में रात दिन रत अछूतों को उनके कुओं से पानी तक भरने का अधिकार नही था | उच्च वर्ग की दृष्टि में अछूत के पानी भरने से कुएँ का सारा पानी अपवित्र हो जाता हैं और अपवित्र पानी उच्च वर्ग अपने गले सें नीचे कैसे उतार सकता है? 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में उच्च जातियों के अमानवीय एवं निर्दयातापूर्ण व्यवहार के प्रति जोखू गंगी से कहता है -'हम जो मर भी जाते है तो कोई दुआर पर झॉकने नहीं आता, कंधा देना तो बडर बात है | ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे |' गंगी छिपकर ठाकुर के कुएँ से पानी भरने का प्रयास करता है | पर अचानक ठाकुर आ जाने सें भाग जाता है |

प्रेमचंद के हृदय में अछूतों के प्रति सहानुभूति का अक्षय भंडार था, इसलिए वे चाहते थे कि लोग जाति - पाँति के भेदभाव को भूलकर उन्हे उचित सम्मान प्रदान करें | कर्मभूमिं का अमरकांत अछूतों के एक गाँव में जाकर अश्रय मांगता है | सलोनी के यह कहने पर कि यहाँ तो सब रैदास रहते है, अमरकांत प्रेमचंद के विचारों का प्रतिनिधित्व करता हुआ कहता है- 'मैं जात पाँत- नही मानता माता जी | जो सच्चा है, वह चमार भी हो, तो आदर केजोग है, जो दगाबाज, झूठा, लंपट हो वह ब्राम्हण भी हो तो आदर के जोग नही |' 'गोदान' में मातादीन का सिलिया चमारिन से प्रेम - संबंध है | पर धार्मिक ढकोसलों के कारण छुआछूत का भेदभाव बना रहता है | कुछ दिनों बाद उसके हृदय में मानवीयता के भाव जाग्रत होते है और सिलिया के साथ रहने का निर्णय करके वह कहता है- 'मैं ब्राम्हन नहीं चमार ही रहना चाहता हूँ | जो अपना धरम पाले वही ब्राम्हन है, जो धरम से मुँह मोडे वही चमार है |'

विदेश यात्रा को पाप समझाना भी धार्मिक संकीर्णता का ही परिचायक है | इस संदर्भ में प्रेमचंद लिखतें है - एक जमाना था कि भारत के भिक्षुओं ने विदेश यात्रा करके अपने देश और धर्म का गौरव बढाया था | फिर पाखंड का यह चक्र चला कि विदेश जाना पाप हो गया और आज कर ऐसे उदाहरण आये दिन मिलते रहते है कि लोग विदेश से लौटकर प्रायश्चित करने लिए काशी दौडते है | इस बीसवी सदी में ऐसा ढकोसला भारत जैसे पाखंड प्रधान देश के सिवा और कहाँ हो सकता है, और भारत अध्यात्मवाद का केंद्र है | आज भी यहाँ के अध्यात्मवादी लोग विदेश जाना पाप समझते हैं और उसके प्रयश्चित स्वरुप गोबर खाते हैं, सिर मुडाते है और भोज देते है धर्मांधता और पाखंड-लिप्सा पर आँसू बहाने की इच्छा होती है | ..... इसी पाखंड ने और इन्हीं पाखंडियों ने भारत को चौपट किया और आज भी उनका वैसा ही पाखंड- राज है | ऐसे धार्मिक संकिर्णताओं मे जीने वाले पांखडियों पर प्रेमचंदजीने अपने साहित्य के माध्यम से तीखा प्रहार किया है,और समाज को सजग करने का सफलतापूर्वक प्रयास ही उनका साहित्य रहा है |

संदर्भ संकेत:-

१) कर्मभूमी - प्रेमचंद.
२) मंदिर - मानसरोवर (भाग - ५) प्रेमचंद.
३) गबन - प्रेमचंद.
४) ठाकुर का कुआँ - मानसरोवर (भाग - १) प्रेमचंद.
५) विविध प्रसंग (भाग – ३) संकलनकर्ता - अमृतराय.
६) खून सफेद - मानसरोवर (भाग - ८) प्रेमचंद.